

विवेकज वि. (तत्.) सत्य और असत्य के विवेचन से उत्पन्न तत्व, ज्ञान, चातुर्य, वैदूष्य।

विवेकवादी पुं. (तत्.) वह व्यक्ति जो अपने स्वविवेक से कार्य करने में विश्वास रखता है और किसी के प्रभाव से कार्य नहीं करता।

विवेकवान वि. (तत्.) सत्य और असत्य के ज्ञान से परिपूर्ण ज्ञानी, विचारवान।

विवेकाधीन वि. (तत्.) 1. व्यक्ति के स्वविवेक के अधीन कार्य-व्यापार, अधिकार 2. व्यक्ति की समझ और इच्छा के अधीन जैसे- मंत्रियों के विवेकाधीन कोटे।

विवेकी वि. (तत्.) भले-बुरे की पहचान करने वाला, छानबीन करने वाला, ज्ञानी, विचार वाला।

विवेचक वि. (तत्.) जो भले-बुरे का भेद कर सके, सत-असत विवेचना करने वाला चतुर, ज्ञानी।

विवेचन पुं. (तत्.) सत्यासत्य का परीक्षण, अनुसंधान, मीमांसा, परीक्षण।

विवेचनीय वि. (तत्.) विवेचन करने के योग्य, मीमांसा करने के योग्य हो, परीक्षणीय।

विवेचित वि. (तत्.) 1. जिसकी भली-भांति विवेचना की गई हो, जिसका अनुसंधान किया गया हो 2. निश्चित 3. तय किया हुआ।

विवेच्य वि. (तत्.) विवेचन करने के उपयुक्त, मीमांसा करने के योग्य, परीक्षणीय।

विव्वोक पुं. (तत्.) काव्य. स्त्रियों की एक शृंगारिक चेष्टा जिसमें वे प्रिय के प्रति अनादर प्रकट करती हैं, गर्वपूर्ण उपेक्षा, रूपादि के गर्व के कारण प्रिय की उपेक्षा।

विशंक वि. (तत्.) 1. बिना शंका के, शंका-रहित, निःशंक 2. भयरहित, निर्भय।

विशंकनीय वि. (तत्.) जिससे किसी प्रकार की शंका न हो, जो संदेह से परे हो, जिससे भय की कोई संभावना न हो।

विशंका स्त्री. (तत्.) आशंका, भय, डर, आशंका का अभाव।

विशंकी वि. (तत्.) जो आशंका करता हो, आशंकित, आशंकायुक्त, भयभीत, शक्की, संदेही, संशयालु।

विश पुं. (तत्.) 1. वैश्य, बनिया 2. मानव, मनुष्य 3. लोभ स्त्री. 1. प्रजा, रैयत 2. कन्या 3. जाति 4. क्रम से बीसवाँ, बीसवाँ भाग।

विशद वि. (तत्.) 1. साफ, स्वच्छ, निर्मल, उज्ज्वल, सफेद 2. चमकीला 3. सुंदर 4. स्पष्ट और विस्तृत जैसे- विशद वर्णन, विशद व्याख्या, व्यक्त।

विशदीकरण वि. (तत्.) विस्तार, विस्तार करना, स्पष्टीकरण, व्याख्या।

विशपति वि. (तत्.) राजा, नृप।

विशल्य सं.वि. 1. कंठक मुक्त, चुभे/धँसे हुए काँटे से मुक्त 2. कष्ट और चिंता से मुक्त, निश्चित।

विशल्या वि. (तत्.) आयुर्वेद में गुडुच, दंती, नागदंती आदि औषधियों को विशल्या कहा जाता है क्योंकि वह रोग, कष्ट से मुक्त करती हैं।

विशांपति पुं. (तत्.) राजा, नृप।

विशाख वि. (तत्.) 1. शिव-पार्वती पुत्र, कार्तिकेय, स्कंद 2. शाखाओं से रहित, छिन्न शाखा 3. धनुष चलाते समय एक मुद्रा जिसमें शारीरिक संतुलन के लिए एक पैर आगे और दूसरा उससे कुछ पीछे रखा जाता है।

विशाखा स्त्री. (तत्.) ज्यो. 27 नक्षत्रों में से 16वाँ नक्षत्र 1. उप-शाखा, बड़ी शाखा में से निकली छोटी शाखा 2. सफेद पुनर्नवा 3. राधा की एक सखी 4. भगवान बुद्ध की भक्त एक तेजस्वी नारी।

विशारद वि. (तत्.) 1. चतुर, निपुण, कुशल, निष्णात 2. किसी विषय का विशेषज्ञ जैसे- आयुर्वेद विशारद, नीति विशारद 3. पंडित, विद्वान।

विशाल वि. (तत्.) 1. बहुत बड़ा, विस्तृत, बहुत लंबा-चौड़ा 2. आकार, प्रकार, ऊँचाई, डील-डौल आदि में बहुत बड़ा जैसे- विशाल वृक्ष, विशाल राक्षस 3. संख्या की दृष्टि से बड़ा जैसे- विशाल